आदिवासी समाज में सरना धर्म की अवधारणा : एक दार्शनिक अनुशीलन

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद की मानविकी संकाय के दर्शनशास्त्र विभाग में पीएच.डी हेतु

<u>शोध सारांशिका</u>

शोध निर्देशक

डॉ. मनोज कुमार तिवारी

सहायक प्राध्यापक

सिंदरी कॉलेज, सिंदरी

धनबाद, झारखण्ड

शोध छात्र

अजय महतो

दर्शनशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो

कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद, झारखण्ड

1. विषय प्रवेश (Introduction)

साधारण धर्म हिंदू, इस्लाम, सिख, बौद्ध एवं जैन धर्म जैसे जितने ऐतिहासिक धर्म है उनके कुछ न कुछ आधार है, मान्यताएँ है। उसी तरह एक धर्म है, आदिवासी धर्म। जो ऐतिहासिक धर्मों के व्यवहारों तथा आधारों का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इनके भी कुछ आधार एवं मान्यताएँ है। जो ऐतिहासिक होने का दावा करता है। आदिवासी धर्म एक आदिम धर्म है। इसका संबंध आदिम युग से है। आदिवासी का अर्थ है जो आदिकाल से निवास करते आ रहे हैं। ये वह मनुष्य है जो आज भी आदिम जीवन पद्धति को अपनाये हुए है। आदिवासी को अलग अलग नामों से पुकारा जाता है जैसे आदिवासी, देशी, मूलवासी, आदिम मानव एवं जंगली मानव। इस धर्म में जादू, अंधविश्वास, एवं भ्रम अधिक पाया जाता है। आदिवासी समुदाय के बारे में समस्त आदिवासी की संस्कृति एवं सभ्यता का पता चलता है। ये मूलत: जंगलों में निवास करते है इसलिए इन पर सभ्यता का बहुत कम प्रभाव पड़ा है। आदिवासी समुदाय भारत की प्राचीन समुदाय है। भारतीय आदिवासी देश का मूल निवासी है तथा इसे प्रकृति से अधिक लगाव है। ये लोग प्रकृति पूजक है। ये युगों से प्रकृति, जंगलो एवं पहाड़ों की पूजा करते आ रहे है। ये लोग आदिकाल से वन पर्वतों में निवास करते आ रहे हैं। ये लोग आदिकाल से प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाई है।"प्रो. कृष्ण चंद्र टुडू के अनुसार ,"झारखण्डी आदिवासियों का धर्म सरना है। संथाली भाषा में सार का अर्थ है तीर। तीर आदिवासियों का मुख्य अस्त्र है, तीर धनुष। सभी धार्मिक रीति रिवाज में या संस्कार में तीर धनुष का प्रयोग होता है। इसलिए आदिवासियों के धर्म को सरना कहा गया है।"[1] आदिवासी युगों से समानता, सहभागिता तथा एकता की नीति को अपनाया है। यह अपनी संस्कृति भाषा जल जंगल तथा जमीन का स्वामी रहा है। आदिवासियों ईश्वर और इसके अवतारों का कोई स्थान नहीं हैं। आदिवासी लोग बोंगा नामक शक्ति को मानते है। यह शक्ति सभी स्थानों पर व्याप्त है। यही बोंगा उनकी रक्षा करता है। पुन "प्रो. कृष्ण चन्द्र टुडू लिखते हैं कि "संथाल जाति प्रकृति पूजक है और सरना धर्मावलंबी है।सरना धर्म में चंदोबोंगा , मारंगबुरू, जाहेर आयो, गोसाई, गोसाडे–तुरुईको तथा बोंगा आदि देवी देवताओं को सर्वशक्तिमान मानकर पूजा जाता है।"[2] संथाल धर्म व्यवस्था में संथाल परंपरानुसार चांदोबोंगा सभी की भलाई के लिए, मरांगबु सभी की भलाई के लिए, गोराम बोंगा गांव की भलाई के लिए तथा दिशोम बोंगा खराब परालौकिक शक्तियों से बचाव हेतु पूजे जाते है। आदिवासियों को विश्वास है की जीव या चेतन प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है। इसी कारण आदिवासी समुदाय में पेड़, पक्षी, पशु एवं जल की पूजा पायी जाती है। आदिवासी धर्म में प्रकृति का विशेष महत्व है। उनका जीवन प्रकृति से जुड़ा हुआ है। प्रकृति में घटने वाली हर घटना से मानव जीवन प्रभावित है। ये उनका विश्वास है। उनकी नजर में सूर्य, चंद्रमा एवं पृथ्वी ये सभी प्राकृतिक शक्तियां है। आदिवासी समाज में समस्त मानव जाति और उनकी सभ्यता, संस्कृति एवं परम्पराओं को देखने को मिलता है। आदिवासी

को मूलतरू वनों में रहने के कारण इस समाज में विकास बहुत ही कम हो पाया है। ये समाज आज भी पुरानी सभ्यता को अपनाए हुए है।

2. साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा (Review of literature)

प्रस्तुत शोध में हमने ऐतिहासिक धर्म के आदिवासी धर्म की युक्तियों, अनुसंधानों एवं विवेचनाओं से एकत्रित कर बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। इसमें हमने प्रत्येक आदिवासी समुदाय में प्रचलित धार्मिक विश्वासों, कर्मकांडों तथा धार्मिक मान्यताओं का अध्ययन विद्धवानों, आध्येताओं, दर्शनिकों तथा समजशात्रियों शोधर्थियों ने किया है जो विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया है उनमें से कुछ नाम है शरतचंद्र राय एम. एन. श्रीनिवास, बी. एच. मेहता, डी. एन. मजूमदार, ए. कंपेलवेल, रेडक्लिफ् ब्राउन, एस. तर्नर जे. कुलशाव। इसके अलावे ऐसे विद्वान, अध्येता एवं शोधार्थी जिन्होंने आदिवासी धर्म पर लेखन किया है। कुछ आदिवासी अध्येताओं एवं विचारकों ने भी आदिवासी धर्म पर लेख लिखा है। आदिवासी विचारक डॉ . रामदयाल मुंडा ने ग्रंथ आदिधर्म लिखकर आदिवासियों को धार्मिक पहचान देने का प्रयास किया है। श्री पी. सी. झाबाडे द्वारा लिखा आदिवासी धर्माचा शोध एक आह्वान (2009) में विशेष शोध मूल्य न होते हुए भी आदिवासी धर्म को समझने एवं जानने के लिए यह पुस्तक काफी महत्वपूर्ण है।

3. समस्या का विधान (Statement to the Problem)

सरना धर्म आदिवासियों का पहचान है सभी आदिवासियों के लिए सरना धर्म का बहुत ही प्रयोजन है परंतु आदिवासी समाज कई श्रेणियों में बंटा हुआ है आदिवासी लोगो का सामान्य चिंता उनके धर्म को लेकर है जो अन्य धर्मों में विलय होते जा रहे है। उनका धर्म विलुप्त होता जा रहा है। सरकार इसके लिए कोई भी कदम नहीं उठा रहा है। ये समाज सभी धर्मों की तरह एक अलग धर्म है। आदिवासियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहला जिन्होंने ईसाई धर्म अपनाया है और दूसरा जिन्होंने हिंदू धर्म में विलय हो गए और वह जो किसी धर्म के रूप में पहचान नहीं रखते लेकिन जनगणना में उन्हें हिंदू धर्म में दर्ज है। तीसरा व अंतिम श्रेणी हिंदुओं के समान है लेकिन वास्तव में समान नहीं है। जैसे पीपल और बरगद के पेड़ों की पूजा हिंदू धर्म में भी की जाती है। लेकिन सरना धर्म का तरीका अधिक प्राकृतिक है जिसमें प्रकृति पूजा के साथ साथ पवित्र जगहों और पुजारियों को भी शामिल किया जाता है।

4. समस्या का अनुसंधान (Problem to be Investigated)

आदिवासी समुदाय की सबसे बड़ी समस्या उसके धर्म को लेकर है। आदिवासी समाज स्वयं को बाकी समाजों से अलग समझता है। इसी प्रकर अन्य समाज भी आदिवासी लोगों को जंगल पर्वतों में रहने वाला मानते है। आदिवासी समुदाय के इस भेदभाव के कारण उनके पृष्ठभूमि एवं इतिहास को खास तौर पर उसके

धार्मिक जीवन एवं धर्म को जानने का प्रयास किया जा रहा है। आदिवासी समाज मध्ययुग से मूल रूप से हिंदू धर्म पर निर्भर होने पर भी इसका एक अलग पहचान है । इसका एक अलग संस्कृति एवम् परंपराएं है। यहां आदिवासियों को अन्य धर्मों से अलग परिणाम देखने को मिलता है। इसे हमारे शोध में अनेक प्रकार की समस्याओं को सामने रखकर अनुसंधान किया जा सकता है। आदिवासी समाज हिंदू धर्म से अलग है क्योंकि इसमें ईश्वर की कोई आकृति नहीं है। इसमें सर्वोच्च आत्मा की पूजा की जाती है जिसका कोई नाम नहीं है। इसमें सर्वोच्च आत्मा के रूप में पेड़ों, पहाड़ों और नदियों की पूजा की जाती है। "रामदयाल मुंडा ने अपनी पुस्तक आदि धरम में आदिवासियों के धर्म और दूसरे धर्म में अंतर बताएं हैं। उनके मुताबिक "अन्य धर्म को चारदीवारी का घर चाहिए आदिवासी धर्म को नहीं। आदिवासी धर्म में पाप पुण्य , स्वर्ग नरक की अवधारणा नहीं है और न ही आदिवासी धर्म में ईश्वर से बात करने के लिए मध्यस्थता की जरूरत है। जबकि दुसरे धर्म में पंडित, मुल्ला, पादरी आदि का होना जरूरी है।"[3] यह समाज मूल रूप से अपने ही धर्म के बीच बंदी बनकर रह गया है। इन सभी समस्याओं को लेकर अनुसंधान किया जा सकता है। "कुजुर जेवियर के अनुसार" आदिवासी संस्कृति में एक विश्वदृष्टि है और समतामूलक न्यायपूर्ण एक नए समाज की कल्पना है एक ऐसा समाज जहाँ प्रकृति के साथ सामंजस्य पूर्ण सम्बन्ध हो एवं टिकाऊ विकास हो ।"[4] विनीता दामोदरन दक्षिण एशियाई इतिहास के प्रोफेसर ने सरना धर्म को लेकर स्पष्टीकरण दी है । कि झारखंड के आदिवासियों में सरना उनकी संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं पर आधारित है। सरना सरना से जुड़ी उनकी संस्कृति व परंपराओं को समझना तथा उसका सम्मान करना आवश्यक है। पूरे भारत में इनके संस्कृति और मानदंडों को बहाल करने में अत्यंत आवश्यक है।

5. <u>शोध का उद्देश्य (objective of the research)</u>

प्रस्तुत शोध में आदिवासी समुदाय में उनके धर्म को लेकर विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक रहस्य एवं मापदंडो को समझना और समस्याओं को एकत्रित करना जिससे उनके धर्म के विभिन्न विषयों को खोजा जा सके । आज के युग में आदिवासी के मूल धर्म उनके विभाजन को सामने रखकर एक नया मार्ग निकालना इससे उनके धार्मिक परंपराओं के क्षेत्र में शोध को एक नई दिशा देने में सक्षम हो। प्रस्तुत शोध में आदिवासी समाज के स्वरूप, जीवन शैली, संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं को सामाजिक,दार्शनिक रूप में देखने का प्रयास किया गया है। वहीं आदिवासियों के सामाजिक,सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं को जंगलों के साथ उनके जीवन में गहन सम्बन्ध को समझने एवं जानने का प्रयास किया गया है।

6. परिकल्पना (Hypothesis)

प्रस्तावित शोध कार्य में आदिवासी समुदाय के बीच विशिष्ट समस्या और अनुसंधान का परिणाम आदि धर्म सरना को समाज के सामने रखकर इस धर्म का विशिष्ट परिचय प्राप्त कर पाएंगे। आदिवासियों के जीवन में विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक एकाकीपन, संकुचित स्वभाव, परंपराओं एवं आदिम जातियों के प्रकृति के प्रति विशिष्ट आस्था एवम् लक्षण को जान सकेंगे। वर्तमान समय में आदिवासियों में उनके धर्म को लेकर ऐसी धारणा बन गई है कि इन लोगों में अपने मूल धर्म को अपनाने की भावना उत्पन्न हो रहे हैं। आदिवासी समाज में धर्म की भावना के प्रति उनके विचारों में प्रभावित होने लगा है।

7. शोध प्रारूप एवं शोध पद्धति (Research Design and Research Methodology) :

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आदिवासी धर्म से संबंधित ऐतिहासिक, भौगोलिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक जानकारी एकत्रित करने के साथ उनके धार्मिक स्थलों, पुस्तकों, पत्रिकाओं के माध्यम से सूचना एकत्रित की जाएगी। ऐतिहासिक अध्ययन के अन्तर्गत आदिवासी समाज के धार्मिक मान्यताओं, आस्थाओं एवं संस्कृतिक के बारे में प्रकाश डाला जाएगा। उनके जीवन शैली, संस्कृति एवं धर्म को जानने के लिए मुझे ऐतिहासिक पद्धति का सहयोग लेना होगा। आदिवासी समाज और उनके धर्म पर इसका प्रभाव तथा प्रकृति के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध होने का अध्ययन लिया जाएगा । ऐतिहासिक विधी का अध्ययन कर तथा प्राथमिक आंकड़ों से मिली जानकारी एकत्रित करके उसका विश्लेषण किया जाएगा और निष्कर्ष तक पहुंचा जाएगा । निष्कर्ष तक पहूंचने के लिए विश्लेषण पद्धति का सहायता लेना जरूरी होगा। आदिवासी समाज में सरना धर्म से जुड़े लोगों एवं स्थानों पर वहाँ के बारे में लोगों एवं धर्मगुरुओं से साक्षात्कार कर ऐतिहासिक तथा वर्तमान संदर्भों को जानने का कौशिश की जाएगी इसके अलावा आदिवासी धर्म एवं संस्कृति से जुड़ी विभिन्न स्थानों , क्षेत्रों एवं संस्थानों का दौरा कर इसके धार्मिक मान्यताओं एवं परंपराओं के विषय में अध्ययन किया जाएगा। प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों एवं प्रकाशित पुस्तकों से प्राप्त आंकड़ों का संकलन किया जाएगा।

8. तथ्य संकलन (tools to be be used in the collection) :

मेरे प्रस्तुत शोध में आदिवासी समाज के सरना धर्म से संबंधित शोध कार्य को पूरा करने के लिए विभिन्न आंकड़ों, लेखों, पत्रिकाओं लोगों से साक्षत्कार, लाइब्रेरियों, और अनुसंधान संबंधी जरूरी दस्तावेजों की जरूरत पड़ेगी इसके साथ ही साथ शोध से संबंधित संस्थाओं में जाकर पुस्तकों का अध्ययन करूँगा तथा संस्थानों में लोगों से साक्षात्कार करूंगा तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित करूँगा स साथ ही साथ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों एवं शोध संस्थानों में शोध संबंधी पत्रिकाओँ का संकलन,वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाएगा।

9. <u>शोध कार्य का महत्त्व (Significance of proposal work)</u>

प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि सरना धर्म कई दृष्टिकोण से महत्व है। इस समाज में धर्म सरना धर्म के प्रति दृष्टिकोण की समस्याओं का क्या समाधान है?आदिवासी समाज में धर्म को लेकर वर्तमान में जो समस्या है। आदिवासी धर्म से संबंधित समस्या को सामने रखकर अनुसंधान को पूर्ण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त आदिवासी धर्म में ईश्वर और हिंदू धर्म के अंतर्गत वर्ण व्यवस्था के प्रति उनके विचारों के संदर्भ में तथ्यों की जानकारी एकत्रित किया जा सकेगा। जीवन के विभिन्न स्तरों में उनके धार्मिक परंपराओं से परिचित कराकर तत्कालीन समाज में धर्म एवं विश्वास का ज्ञान प्राप्त कर पाना संभव होगा । आदिवासी समाज के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे जो आदिवासियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

10. <u>वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to The Existing Knowledge) :</u>

आदिवासी समाज में सरना धर्म विस्तृत विषय संपादन एवं सबसे महत्वपूर्ण कार्य इस क्षेत्र में है । जैसे दृ आदिवासी और इसका निसर्ग धर्म डॉ विनायक तुकाराम की लिखित पुस्तक में धर्म को लेकर कुछ आलोचनाएं है। आदिवासी धार्मिक मान्यताएं एवं पर्यावरण डॉ सुनीता घोगरा द्वारा लिखित पुस्तक में भी कुछ आलोचनात्मक विषय है जो आदिवासियों एवं उनके धर्म के लिए बड़ा ही महत्व है ।

11. <u>अनुसंधान की सीमाएं (Limitation of The Research Work):</u>

प्रस्तावित शोध में आदिवासी समाज में सरना धर्म की अवधारणारू एक दार्शनिक अनुशीलन में एक गहरे और विशेष अनुसंधान की आवश्यकता को दर्शाता है, जो आदिवासी समाज में सरना धर्म के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक पहलुओं की विशेष अध्ययन को संदर्भित करता है। इस अनुसंधान में आदिवासी समुदायों की विविधता, संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं को दर्शायी जा सकती है। सरना धर्म की अवधारणा और दार्शनिक सिद्धांतों के द्वारा विशेषताओं को जानने और समझने का प्रयास किया जाएगा। इस अनुसंधान के द्वारा सरना धर्म का पर्यावरण के प्रति उनके विचारों और विशिष्ट धार्मिक मान्यताओं पर प्रभाव पर विचार किया जाएगा। उनके धर्म में नृत्य का संस्कृति एवं आस्थाओं का आधार प्रस्तुत किया जाएगा। हम आदिवासी समाज की धर्म को के प्रति उनके विभिन्न पहलुओं को गहराई से अध्ययन कर सकेंगे।

12. <u>भविष्य में कार्य होने की संभावना (Future Work) :</u>

प्रस्तावित शोध कार्य में सरना धर्म के संदर्भ में भविष्य में शोध कार्य होने की काफी संभावना है। आदिकाल से आदिवासियों में उनके संस्कृति एवं परंपराओं के अनुरूप जैसा है उसी तरह जान सकेंगे। व्यवहार में अन्य धर्मों से भिन्नता को जान सकेंगे इसके अलावा समस्या को सामने रखकर इस धर्म के बारे में समझ सकेंगे। शोध प्रबंध को प्रस्तुत करने के लिए शोध कार्य को चरण बद्ध तरीके से पूर्ण किया जाएगा। आदिवासी समाज अपने धार्मिक रीति रिवाजों को कायम रखा है। इनकी धर्म के प्रति दृष्टिकोण एवं मान्यताएं प्रशंसनीय है, शोध के योग्य है यह विषय शोध के योग्य होने की संभावना रखता है।

13. संभावित अध्यायः

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय: आदिवासी समाज का स्वरूप

द्वितीय अध्याय: आदिवासी समाज का जीवन दर्शन

तृतीय अध्याय: आदिवासी संस्कृति एवं परंपराएं

चतुर्थ अध्याय: आदिवासी धर्म की मान्यताएं एवं प्रकृति

पंचम अध्याय: आदिवासी धर्म और सरना

षष्टम अध्याय: सरना धर्म दर्शन की उपादेयता

उपसंहार:

प्रस्तावना

आदिवासी समाज भारत की प्राचीन समुदाय में से एक है । यह समाज मूल रूप से प्रकृति में विद्मान जल, जमीन एवं जंगल को ईश्वर मानते हैं। आदिवासी धर्म कोई मतभेद का विषय नहीं है। इसकी उत्पत्ति कब हुई। जब से पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति हुई है तभी से इनके धर्म का अस्तित्व रहा है। आदिवासी समुदाय में धर्म से अलग उनका कोई अलग संस्कृति नहीं रहा बल्कि दोनों ही एक दूसरे से संबंधित है। आदिकाल से इनके संस्कृति को लेकर विवाद होता रहा है और आज भी होता है। फिर भी इसकी संस्कृति आज भी जीवित है। आदिवासियों की धार्मिक व्यवस्थाओं, मान्यताओं, आस्थाओं और विश्वासों का प्रमाण हमें उनकी धार्मिक संरचना से प्राप्त होता है। आदिवासी समुदाय प्रकृति पूजक है। यह समुदाय प्रकृति को ही सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान मानते हैं। भारत के आदिवासी समुदाय की जीवन की उत्पत्ति में अलग –अलग वंश जुड़ा

है। निग्रीटो, प्रोटो ऑस्ट्रेलाइड, मंगोलाइड, द्रविडियन, नॉर्डिक, मेडिटेरेनियन । आदिवासी समुदाय के लोग प्रकृति को ईश्वर, धरती को माता , आकाश को पिता , पहाड़ों को मगरा बाबा और पेड़ों की छाया को देवताओं की छाया कहते हैं। इस समाज का प्रकृति के प्रति अटूट विश्वास होता है। तत्त्व ज्ञान आदिवासी अपनी सभी आवश्यकताओं को पूर्ति प्रकृति से ही प्राप्त करते हैं। आदिवासी समुदाय के लिए प्रकृति सब कुछ है। आदिवासी समुदाय विभिन्न उप जातियों में बंटा हुआ है। सभी समुदाय प्रकृति पूजक होते है। ये समाज प्रकृति पूजक होने के कारण ये समुदाय किसी ईश्वर या ईश्वर के अवतार को नहीं मानता। आदिवासी सधर्म व्यवस्था में अवतारवाद की संकल्पना नहीं है। ईश्वर ने अवतार लेकर मानव जाति का कल्याण किया है, इस पर इसका विचार विश्वसनीय नहीं है। आदिवासी समाज में धर्म की धारणा संसार में विद्दमान सभी धर्म के तत्त्व ज्ञान से हटकर है और प्रशंसनीय है। इस पर शोध करने की संभावना है।

प्रथम अध्याय

आदिवासी समाज का स्वरूप

इस अध्याय में आदिवासी समाज के स्वरूप का उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत आदिवासी समाज अन्य समाजों से अलग है। इसकी एक अलग संस्कृति एवं पहचान है। यह एक ग्रामीण समाज है। आदिवासियों का आधार जाति एवं कृषि है। आदिवासी समाजों की गिनती वैसे समाजों में की जाती है जो जंगलों एवं पहाड़ों में रहा करते है। आदिवासी समाज अन्य जातियों से अलग होते हैं। यह भाषा और बोली के माध्यम से आपस में जुड़े हुए होते हैं। यह समाज मूल रूप से परिवार एवं नातेदारी पर आश्रित है। आदिवासियों का अपना स्वयं का धर्म होता है। इसके धर्म का स्वरूप आत्मवाद है। ये अन्य देवी देवताओं और पूर्वजों की पूजा करते है। इसका आधार टोटमवाद है। टोटमवाद के अनुसार किसी पेड़ या जानवर को अपने पूर्वजों को अपना संस्थापक मानते है उनका विश्वास प्रकृतिवाद में होता है प्रकृति के अन्तर्गत नदी, सूर्य, चन्द्र पहाड़ और जंगलों की पूजा करते है।

द्वितीय अध्याय

आदिवासी समाज का जीवन दर्शन

सभी समाजों में जीवन जीने लिए अलग पद्धति होता है जो विभिन्न समुदायों को एक दूसरे से अलग करता है उसी का अनुसरण करते हुए अपने लक्ष्य की और बढ़ता है और अपनी परम्पराओं एवं मान्यताओं के अनुसार

जीवन निर्वाह करते हैं। आदिवासी समाज में लोक संस्कृति अन्य समुदायों से अलग है।प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक इनकी लोक संस्कृति हस्तांतरित होती रही है। आदिवासी समुदाय में लोक संस्कृति एक ऐसा नियम है जो आदिवासियों को एक अलग संस्कृति तथा अलग धार्मिक पहचान कराती है। आदिवासियों का यह धर्म परंपरागत है। आदिवासियों के धार्मिक जीवन एवं सांस्कृतिक मूल्यों में काफी सादृश्य दिखाई पड़ता है। उनके धार्मिक परंपराओं में उनकी धारणाओं,उनकी विश्वासों, उनकी मान्यताओं और आस्थाओं में भी समानता दिखाई देता है। आदिवासी धार्मिक व्यवस्था में समुदायों के बीच एकता उन्हें समूह में बांध कर रखती है। इनके देवी देवताओं में भी भिन्नता होती है। इनके पूजा करने की विधियों में भी अंतर पाया जाता है। आदिवासियों के लिए ये धरती ही जीवन का आधार है। उनका मानना है कि जीवन जीने के लिए जरूरत वस्तुओं की उपज धरती पर ही होती है।

तृतीय अध्याय

आदिवासी संस्कृति एवं परंपराए

प्रस्तुत अनुसंधान झारखंड की संथाल जनजाति से संबंधित है। झारखंड राज्य के संथाल परगना तथा उत्तरी छोटननागपुर के कुछ जिलों खासकर धनबाद,बोकारो,गिरिडीह में निवास करते है। जनसंख्या की दृष्टि से संथाल जनजाति झारखंड में प्रथम स्थान पर आता है। कहने का अभिप्राय यह है की यह एक ऐसा महत्वपूर्ण समूह है जिसकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति,धर्म,संस्कार, और धार्मिक पहचान है। इस जनजाति में अंधविश्वास,डायन प्रथा आदि कुप्रथाएं भी है। इसमें परंपरागत न्याय व्यवस्था भी पाई जाती है। ये विभिन्न विवादों का न्याय भी करता है और दोषी को दंड भी देता है। इनके दंड में जुर्माना एवं बहिष्कार भी शामिल होता है।

चतुर्थ अध्याय

आदिवासी धर्म की मान्यताएं एवं प्रकृति

आदिवासियों का स्वयं का धर्म है। ये प्रकृति पूजक है और सूर्य, नदी, पहाड़ और जंगलों की आराधना करते है तथा अपने अलग धर्म में ग्राम देवता, कुल देवता आदि पर आस्थाएं रखता है। आदिवासी समाज के अन्तर्गत प्रकृति सरना के लिए बड़ा ही महत्व है। आदिवासी समुदाय प्राचीन काल से ही पर्यावरण पर निर्भर है । भोजन के लिए खाद्य पदार्थों, पहनने के लिए पत्ते, जानवरों की खाल और रहने के लिए गुफाएँ जंगलों

में उपलब्ध होते थे । वर्तमान में भी भी इस समुदाय के लोग जंगलों पर निर्भर है । आदिवासी समुदाय के लोगों में जंगल एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस समुदाय के लोगों का जंगलों के साथ गहरा संबंध है। आदिवासियों का मुख्य व्यवसाय खेती है। अधिकतर जमीन आदिवासियों के पास है। परंतु उनके जमीन में कमी होती जा रही है। आदिवासियों के पास जितनी जमीन है उसमें भी वह पर्याप्त अनाज उपजा नहीं पाता है। आदिवासियों की अधिकतर जमीन बंजर होने तथा जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि पर से उनकी निर्भरता कम होती जा रही है।

पंचम अध्याय

आदिवासी धर्म और सरना

सरना धर्म प्रकृति पूजा पर आधारित है। सरना धर्म को मानने वाले लोगों को प्रकृतिवादी कहा जाता है। इस धर्म के अंतर्गत प्रकृति में विद्दमान सभी पेड़ पौधे, पहाड़ और प्राकृतिक संसाधन को ईश्वर का रुप मानकर इनकी पूजा और उपासना करते हैं। आदिवासी समुदायों का एक पवित्र स्थल होता है जहां सरना मां की पूजा होती है। इस स्थल को सरना स्थल कहा जाता है। इस स्थल पर साल का वृक्ष होता है जहां सरना मां का निवास स्थान होता है।सरना मां का आस्तित्व मानकर उनकी पूजा और उपासना करते हैं। आदिवासी लोग विभिन्न त्योहारों के सुअवसर पर एकजुट होकर प्रकृति की पूजा करते हैं। आदिवासी समुदाय में सरना धर्म को आदि धर्म कहते है। सरना धर्म को मानने वाले आदिवासियों में संथाल, हो, मुंडा, उरांव, भूमिज, गोंड तथा भील प्रमुख है। सरना धर्म आदिवासियों की जीवन जीने की एक कला एवं पद्धति है। सरना धर्म में व्यवहारों के साथ गहरी आस्था एवं आध्यात्मिकता जुड़ा हुआ है। झारखंड के प्राय: सभी सरना धर्म आदिवासियों का प्राचीन धर्म जनजाति खास तौर पर छोटानगपुर तथा संथाल परगना के सभी आदिवासी इस धर्म को मानते है। सरना में आस्था रखने वाले स्वयं को विशिष्ट धर्म के मानते है। सरना धर्म आदिवासियों का प्राचीन धर्म है। छोटानागपुर और झारखंड के संथाल परगना के प्रायरू सभी आदिवासी इस धर्म को मानते है। अदिवासियों का एक बड़ा सा भाग स्वयं को हिंदू नहीं मानते है। सरना में आस्था रखने वाले स्वयं को विशिष्ट धार्मिक समूह के रूप में मानते है। इसमें झारखंड के अदिवासियों की संख्या सबसे अधिक है। सरना धर्म का आधार जल, जंगल और जमीन है। ये लोग इसे पवित्र मानकर इन पर आस्था रखते हैं। इनको मानने वाले वन क्षेत्रों की रक्षा में विश्वास करते है तथा पेड़ और पहाड़ों की पूजा करते है। सरना को मानने वाले मूर्ति पूजा , वर्ण व्यवस्था एवं स्वर्ग नरक में विश्वास नहीं करते है। सरना धर्म में साल के पेड़ का विशेष महत्व है। जड़ से लेकर पत्ते एवं फूल तक यह वृक्ष आदिवासियों के लिए उपयोगी एवं लाभदायक है। सरना धर्म में अन्य वृक्ष भी अपने अपने गुणों के कारण उपयोगी है। इसलिए आदिवासियों ने इस वृक्ष को देवता माना है।

सरना धर्म के अनुयायी प्रकृति का पूजन करते है। वह घर के चूल्हा , बैल, मुर्गी,पेड़,खेत,खलिहान,चांद और सूरज के साथ संपूर्ण प्राकृतिक प्रतीकों का पूजन करता है। वह पेड़ को काटने से पहले पेड़ से क्षमा याचना करते है। सरना धर्म सबसे पुराने धर्मों में से एक है फिर भी आज सरना धर्म के आस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति को हिंदू मानते है लेकिन बहुत से कानून है जो इन पर लागू नहीं होता है। जैसे विवाह,बहु विवाह, तलाक, दहेज प्रथा, दत्ताकता,भरण पोषण,उत्तराधिकारी जैसे प्रावधान इन पर लागू नहीं होता है। ये हिंदू विवाह अनुच्छेद (२) के बाहर है इन्हें आई . पी. सी की धारा 294 के तहत दोषी नहीं माना जा सकता है। 2005 में सुप्रीम कोर्ट के द्वारा कहा गया है कि अनुसूचित जनजाति अपनी परंपरा के अनुसार शादी कर सकता है। आदिवासी समाज में सरना धर्म प्राचीन कथाओं पर स्थापित हुई है । आदिवासियों का जीवन जंगलों एवम् पहाड़ों तक ही सीमित था। राजपूत राजाओं,मुगलों, एवम् अंग्रेजों ने इनकी सत्ता छीनकर वनों में धकेल दिया था। स्वतंत्रता के बाद आदिवासियों के विकास के लिए योजनाएं बनाई गई । इन योजनाओं से आदिवासियों को आधारभूत सुविधाएं एवम् काम मिला इसके बाबजूद आदिवासी पर्यावरण एवम् अपनी संस्कृति से जुड़ा रहा इसी वजह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग भी जीवन के लिए सीमित रखा है और प्राकृतिक संसाधनों को संपति माना। इस विचारधारा के कारण प्राकृतिक वातावरण में संतुलन बना रहता है। इसी कारण आदिवासियों का प्रकृति के साथ सहज रिश्ता आज भी विद्यमान है।

षष्टम अध्याय

सरना धर्म दर्शन की उपादेयता

सरना धर्म आदिवासियों के लिए उपयोगी है। सरना धर्म दर्शन एक अलग परंपरा को दर्शाता है। सरना धर्म दर्शन का अध्ययन द्वारा समस्त आदिवासी समाज का उत्थान संभव है। सरना धर्म आदिवासी समाज का अवियोज्य अंग है। सरना धर्म की महत्ता आदिवासियों के जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सरना धर्म आदिवासियों का अत्यंत ही शक्तिशाली तत्त्व रहा है। सरना धर्म दर्शन अन्य धर्मों की तरह आदिवासी लोगों को स्वतंत्रता देता है सरना धर्म दर्शन आदिवासी समाज का केंद्र होता है। यह धर्म सभी धर्मों की तरह सत्य की खोज की प्राप्ति में संलग्न है। जिस तरह सभी धर्मों का लक्ष्य है उसी तरह सरना धर्म का भी लक्ष्य है सरना धर्म में कर्म करके जीवन व्यतीत करना आदिवासियों का उज्ज्वल परंपरा का दर्शन कराता है। इस धर्म में जादू टोना,अवतारवाद, भ्रम, ईश्वर एवं भाग्य, अंधविश्वास जैसी धारणाओं को अस्वीकार करता है। सरना धर्म में किसी भी निंदा नहीं करता है ये सभी प्राणीयों से प्रेम करता है और खुले पन की भावना रखता है। सरना धर्म प्रकृति की पूजा एवं सुरक्षा करती है। इसलिए इस समुदाय को प्रकृति पूजक कहा जाता है।

आदिवासी समुदाय वास्तव में जो दिखता वही उनकी दृष्टि में सत्य होता है। सरना धर्म में पेड़ों और जंगलों के प्रति आदिवासियों के दृष्टिकोण को उनके व्रत एवं उपवास में देखा जाता है। सरना धर्म आदिवासी समुदाय में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सरना धर्म में समस्त मानव जाति की सभ्यता और संस्कृति का दर्शन होते है। अतरू सरना धर्म दर्शन का अध्ययन अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है।

उपसंहार

आदिवासी समाज में उनके स्वरूप , उनके जीवन शैली, संस्कृति , धार्मिक परंपराओं एवं पर्यावरण के प्रति विशिष्ट संबंध स्थापित किया गया है । प्रस्तुत शोध में आदिवासी समाज के धर्म संस्कृति और मान्यताओं को नियंत्रण करने का चेष्टा किया गया है । आदिवासी समाज में उनके धार्मिक मान्यताओं का विचार उनके मन में है उसे इस शोध के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आदिवासी समाज स्वयं को सरना धर्म के अनुयायी मानते है। सरना धर्म का आधार प्रकृति है। यह प्रकृति को उसी रूप में मानते हैं जिस रूप में वह है। प्रकृति आदिवासी समाज का प्रतीक है। पर्यावरण आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है। सरना धर्म में पर्यावरण का गहरा संबंध है। आदिवासी समुदाय के अनुसार पर्यावरण में संतुलन को बना रहता है। सरना धर्म को मानने वाले लोगों का मानना है कि प्रकृति में ऊर्जा पूर्ण रूप में होती है जिसका न आदि है न अंत। प्रकृति अनंत है। प्राचीन काल से ही आदिवासीयों की विशिष्ट भाषा रही है । आदिवासियों का प्रकृति के साथ आपसी रिश्ता को बनाकर रखती है। यह शोध झारखंड राज्य में स्थित आदिवासी समुदाय के धार्मिक जीवन एवं क्षेत्रों तक सीमित है। इस क्षेत्र में 32 जनजातियां है।ये सभी आदिवासी होते हुए भी संस्कृति एवं जीवन शैली में अंतर पाया जाता है। इन जनजातियों में अनेक अंतर होते हुए भी ये एक ही धर्म को मानते हैं। आदिवासियों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं को जंगलों के साथ जोड़ने एवं जंगलों के साथ जोड़ने एवं जंगलों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध को समझने और जानने का प्रयास किया गया है।

14. **संदर्भ (references):**

1. टुडू, डॉ. कृष्ण "संथलों की जीवन शैली" आदिवासी लोक दृ १ संपादक रमणिका गुप्ता, शिल्पायन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012, पृष्ठ. 197.

2. टुडू , डॉ. कृष्ण चंद्र आदिवासी जीवन और समाज, डॉ. के. सी. टुडू, राँची संस्करण, 2013, पृष्ठ.15.

3. ″मुंडा, रामदयाल ″आदि धरम″ भारतीय आदिवासियों की धार्मिक आस्थाएं, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2009, पृष्ठ.13

4. कूजूर जेवियर ″आदिवासी संस्कृति पर सुनियोजित हमले″ आदिवासी सत्ता (पत्रिका) छत्तीसगढ़, अंक–4, 2009.

15. सहायक ग्रंथ सूची: (Biplography)

1.एल्विन, वेरियर, अदवासी दिकू और एक स्वर्ण युग की कल्पना, राजस्थान राज्य शैक्षणिक अनुसंधान संस्थान प्रकाशक राजस्थान राज्य पुस्तक मंडल जयपुर 2011.

2. घोघरा, वेलराम, आदिवासी संस्कृति बनाम धाम-धुनिया टी आर आई उदयपुर 1994.

3. घोघरा, डॉ. सुनिता, आदिवासी धार्मिक मान्यताएं एवं पर्यावरण, जवाहर कला केंद्र, खंडेलवाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स जयपुर (2015).

4. टुडू, डॉ. कृष्ण चंद्र संतालों की जीवन शैली, आदिवासी लोक - 1 संपादक रमणिका गुप्ता, शिल्पायन नई दिल्ली 2012.

5.टुडू, डॉ कृष्ण चंद्र, झारखण्डी आदिवासी जीवन और समाज, प्रकाशक के. सी. टुडू राँची संस्करण, 2013.

6. तलवड़ा, शंकर, प्रकृति पूजक धर्म और संस्कृति, प्रकाशन पगनीस पागा, इंदौर 1998.

7.तुकाराम, डॉ. विनायक, आदिवासी समाज और उसका निसर्ग धर्म, सुधीर प्रकाशन वर्धा गंज नागपुर 2016.

8. नाईक, डॉ. जाकिर विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना, प्रकाशन अल हसनात बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली 2013.

9. भाणावत, महेन्द्र, जनजातियों के धार्मिक सरोकार, मुक्तक प्रकाशन उदयपुर 2006.

10. मीणा, जगदीश चंद्र, भील जनजाति का सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन, हिमांशु पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2023.

11.मीणा, हरिराम, आदिवासी समाज और दर्शन जवाहर हिन्दी अकादमी जयपुर (2020) .

12.मुंडा, डॉ. रामदयाल, ″ आदि धरम,″ आदिवासियों की धार्मिक आस्थाएं, झारखण्ड प्रकाशन, राँची 2000.

13. मुंडा, डॉ. रामदयाल, आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, प्रकशन नई दिल्ली 2002.

14.मेहता, प्रकाश, भारत के आदिवासी एक धार्मिक, आर्थिक विवेचना, शिवा पब्लिशर्स उदयपुर (1993)स

15.मेहता पी.सी भारत के आदिवासी, शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर (1993)स

16. मीणा, जगदीश चंद्र, भील जनजाति का सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन हिमांशु पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली (2023). ।

17.Anuj ,R Religion of the bhils : A sociological analysis ,sociology bulletin new Delhi (1965).

18.Chandhoke, S.K : Tana Bhagat's -A religions reformation movement, vanyajati (1971).

19.Kulkarni,k.l tribal social change in India, Himanshu Prakashan Udaypur (1985).

20.Kulkarni, M.G problem of tribal development: A case study Parimal Prakashan Aurangabad (1974).